# BACCHON KI BHASHA SIKHNE KI KSHAMTA –PART 2

## Vartani ka Mankikaran

## Shaikshik Sandarbh Sept–Oct 1999

RAMAKANT AGNIHOTRI

## READING GUIDE

MATERIAL PREPARED FOR EKLAVYA, BHOPAL &NMRC, JNU BILINGUAL PROJECT

BY

INDRANI ROY

MAY 2012

# बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता – भाग 2

# वर्तनी का मानकीकरण

रमाकांत अग्निहोत्री

शैक्षिक–संदर्भ सितम्बर–अक्टूबर 1999

भारत सरकार द्वारा हिन्दी वर्तनी के मानकीकरण के प्रयास निरन्तर जारी है। इस लेख में लेखक हमें बताते हैं कि ये प्रयास क्यों बेकार है और इस प्रयास के बदले हिन्दी लेखन–पठन सिखाने की प्रक्रिया में नई सोच लाने की ज़रूरत है।

लेखक हमें बताते हैं की मानकीकरण का प्रयास केवल वर्तनी में ही नहीं बल्कि लिखने के ढंग का भी किया जाता है। जैसे कि *स* कैसे लिखा जाना चाहिये, कहां से शुरू होना चाहिये। लेखक हमें ये सोचने को कहते हैं कि क्या कोई दो इंसान एक ही तरह से कभी लिखते हैं? हर कोई अपने–अपने तरीके से लिखता है तो इस तरह के अर्थहीन प्रयास में समय न गवा कर हमें बच्चों के असली पढ़ाई–लिखाई की तरफ ध्यान देना चाहिये।

इसके बाद लेखक हिन्दी वर्तनी सिखाने की असुविधाओं की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हैं। हिन्दी वर्तनी के बारे में हमारी एक धारणा है कि ये बिल्कुल वैज्ञानिक तरीके से चलती है। अंग्रज़ी वर्तनी के बारे में कई सारे मज़ाक है जैसे – *do – डु, to – टु,* तो *go– गु* क्यों नहीं? हम समझते हैं कि हिन्दी में सभी नियम तर्कसंगत है. इसलिये हम बच्चों से भी ये अपेक्षा रखते है कि वे हिन्दी वर्तनी आसानी से सीख लेंगे। लेखक हमें दिखाते हैं कि हिन्दी वर्तनी में भी कई विचित्रतायें हैं। हम लिखते हैं छोटी *इ* की मात्रा और *क* पर बोलते हैं *क* पहले *इ* बाद में *इक* नहीं। इसी तरह *झांसी की रानी* और *मैंने*

*उससे कहा कि ....* इन दोनो *की* और *कि* को हम एक ही तरह बोलते है पर लिखते वक्त एक में *छोटी इ* और एक में *बड़ी ई*। मुझे याद है स्कूल में जब हमें हिन्दी इमला लिखवाया जाता था तो इस तरह शब्द बोले जाते थे – *इमलीईईईईई*, *बड़ीईईईई*, *इत्यादीईईईई* ताकि हम समझ पाये कि कहां छोटी और कहां बड़ी *ई* की मात्रा लगाई जायेगी पर हम आम बोलचाल में तो कभी भी इस तरह नहीं बोलेंगे।

इस तरह वर्तनी की एक और समस्या है उन अक्षरों को लेकर जिनके असली उच्चारण का लोप हो गया है जैसे कि ऋ। इस अक्षर का उच्चारण हिन्दी में *रि* हो गया है. तो जब कोई बच्चा *ऋषि* को *रिषि* लिखता है तो उसका क्या दोष. ऋ का असली उच्चारण जो पुराने ज़माने में किया जाता था वो स्वर के तरह था और ये उच्चारण हम नहीं करते।

हिन्दी वर्तनी सिखाते वक्त बच्चों से ये कहा जाता है कि जैसा सुनो वैसा लिखो। ये बात इस विश्वास के साथ कहा जाता है कि हिन्दी वर्तनी बिल्कुल वैज्ञानिक तरीके से चलती। पर pen को कुछ लोग *पैन* और कुछ *पेन* बोलते है। कभी–कभी लोग *ड* का उच्चारण *ड़* की तरह करते हैं जैसे *रेडियो* के बदले *रेड़ियो*। या फिर *क्ष* के उच्चारण को लीजिये जो की कई लोग *च्छ* की तरह करते हैं जैसे *कक्षा* के बदले *कच्छा*। इस हालत में जैसा सुनो वैसा लिखो कहना क्या वाजिब है?

इन सब चर्चा के बाद लेखक हमें वर्तनी और राजनीति के गहरे सम्बन्ध के बारे में बताते हैं। वे हमें बताते हैं कि क़यामत को कयामत, काग़ज़ को कागज, ख़बर को खबर, ज़ख्म को जख्म, फ़कीर को फकीर लिखे जाने के पीछे छपाई के कारण के साथ–साथ राजनैतिक कारण भी हैं। ये मुद्दा इस बात पर निर्भर करता है कि क्या हम चाहते हैं कि जिस तरह संस्कृत से आये हुये शब्दों का उच्चारण ठीक तरह से हो उसी तरह फारसी और अरबी से आये हुये शब्दों का भी हो।

इन सब बातों से आपको इतना तो एहसास हो ही गया होगा कि अंग्रेज़ी के तरह हिन्दी वर्तनी में भी कई विचित्रतायें हैं। लेखक हमें बताते हैं कि जहां वर्तनी के नियम तर्कसंगत हैं वहां बच्चों को इन्हें समझने में कोई कठिनाई नहीं होती। जैसे *र* के साथ संयुक्ताक्षर में जब *र* पहले आता है वहां ये सिर पर लगता है जैसे *कर्म* और जहां बाद में आता है वहां पैर पर जैसे *क्रम*। इस नियम में बच्चा शायद ही कभी गलती

करे।

पर जहां नियम तर्कसंगत नहीं हो वहां तो परेशानी होगी ही। हलन्त् के नियम के बारे में आप क्या समझायेंगे ? *महन्त्* और *श्रीमान्* में *हलन्त्* है तो *राम* और *लक्ष्मण* में क्यों नहीं आखिर इन सभी शब्दों मे अन्त के *अ* स्वर का उच्चारण नहीं होता।

चाहे शब्दों के वर्तनी का नियम तर्कसंगत हो या नहीं बच्चों को सिखाने के लिये शिक्षक को चाहिये कि हिन्दी वर्तनी के विचित्रताओं को खुद समझे। बच्चों के सीखने का सही वातावरण तैयार करे ताकि बच्चे अपनी खुद की समझ का इस्तेमाल कर सीख पाये।

**अभ्यास**

1. हिन्दी वर्तनी व्यवस्था के विचित्रता को दिखाने के लिये कुछ उदाहरण दीजिये।
2. हिन्दी वर्तनी व्यवस्था के तर्कसंगत नियमों के कुछ उदाहरण दीजिये।

ध्यान दीजिये कि आपके उदाहरण इस लेख में दिये गये उदाहरणों से अलग हो।

**********